पाठ–5
पंचलाइट

मूल पाठः–

महतो टोली के पंचो ने एक पेट्रोमेक्स खरीदा है। इसको लेकर पंचायत में भारी उत्साह है। दूसरी पंचायत के पेट्रोमेक्स को ब्राहम्णटोली के लोग लालटेन कहते हैं अपनी ढिबरी को भी बिजली बत्ती! महतो टोली में यह जानकर उत्सव का वातावरण है कि अब अपनी पंचायत में भी पेट्रोमेक्स होगा। पेट्रोमेक्स गाँव में आने के बाद सबसे बड़ी समस्या यह हुआ कि पूरी पंचायत में किसी को पेट्रोमेक्स जलाना नहीं आता है। गाँव में दूसरी जाति के लोग तो पेट्रोमेक्स जलाना जानते हैं पर उनसे जलवाने पर जीवन भर ताना सहने का डर है। पंचों की बड़ी फजीहत होती है। दूसरे टोले के लोग हंसी उड़ाने लगते हैं।

ऐसे ही उहापोह के वातावरण में उत्सुकता तब और बढ़ जाती है जब मुनरी के माध्यम से मालूम होता है कि उसका प्रेमी गोधन पेट्रोमेक्स जलाना जानता है। गोधन को मुनरी से प्रेम करने के कारण पंचायत ने उसे छाँट दिया है। इसी प्रसंग में पंचायत की क विसंगति भी उभर कर सामने आती है।

पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। देसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान–सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रूपया जुरमाना! न देने से हुक्का–पानी बंद। आज तक गोधन पंचायत से बाहर है।

यहाँ पंच अपनी खुशामद नहीं करने पर बहाना खोज कर दंडित करते हैं। मुनरी की सहेली कनेली जब पंचायत को यह बताती है कि गोधन पेट्रोमेक्स जलाना जानता है तब डूबते हुए पंचायत को बड़ा सहारा मिलता है। वे तुरंत अपना निर्णय बदल देते हैं और गोधन को बुलाते हैं पर वह नहीं आता है। फिर मुनरी की माँ उसे मना कर ले आती है। गोधन थोड़ी देर में पेट्रोमेक्स जला देता है। सभी उसकी काबिलियत का लोहा मान लेते है।

पंचायत का सरदार दिल खोलकर उसकी प्रशंसा करता है। गोधन और मुनरी का प्रेम सफल हो जाता है।

''गुलरी काकी बोली,'' ''आज रात मेरे घर खाना गोधन!''

गोधन ने फिर एक बार मुनरी की ओर देखा। मुनरी की पलकें झुक गई।''

गोधन युवक है। वह दूसरे गाँव से आकर बसा है। उसे मुनरी से प्रेम हो जाता है। वह अपने प्रेम का इजहार सिनेमा का गीत 'हम तुमसे मोहब्बत करके सनम' गाकर करता है। मुनरी की माँ को गोधन की यह हरकत अच्छी नहीं लगती है। वह उसकी शिकायत पंचों के पास करती है। वह अपने आप में मस्त रहता है। उसने कभी पंचों की खुशामद नहीं की है। इस कारण से पंच उससे नाराज है। वे उसे पंचायत से छांट देते है। गोधन इसकी परवाह नहीं करता है। जरूरत पड़ने पर पंच उसे माफ कर बुलाते हैं पर वह तुरंत नहीं आता है। अप्रत्यक्ष रूप से अपनी बात मनवाकर ही आता है।

हर समाज में पंच होते है। वे अपने समाज के लोगों के सुख–दुःख का ख्याल रखते है। पर उनमें कई खूबियों के साथ–साथ कुछ खामियाँ भी होती है। समाज के लिए पेट्रोमेक्स खरीद कर लाते हैं पर साथ ही अपनी बहादुरी की डींग भी मारते हैं। खुशामद नहीं करने पर गोधन को बहाना खोज कर पंचायत से छांट देते है।

अब यह दूसरा बखेड़ा खड़ा हुआ। सभी ने मन ही मन सरदार दीवान और पंचों की बुद्धि पर अविश्वास प्रकट कीए बिना बूझे–समझे काम करते है। लेकिन गोधन होशियार लड़का है। बिना स्प्रिट के ही पंचलाईट जलाएगा। मुनरी दौड़कर गरी का तेल ले आई। गोधन पंचलाइट में पम्प देने लगा। पंचलाइट की रौशनी थैली में धीरे–धीरे रोशनी आने लगी। थोड़ी देर बाद पंचलैट से सनसनाहट के आवाज निकलने लगी और रोशनी बढ़ती गई। कीर्तनिया लोगों ने एक कीर्तन समाप्त कर जय–ध्वनि की–'जय हो! जय हो! पंचलैट के प्रकाश में पेड़–पौधा का पत्ता–पत्ता पुलकित हो रहा था।

फणीश्वरनाथ रेणु